

संरक्षक

डॉ. एस. के. पाटिल
कुलपति
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शन

डॉ. जे. एस. उरकुरकर
निदेशक विस्तार सेवायें
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा स्रोत

डॉ. अनुपम मिश्रा
निदेशक
आंचलिक परियोजना निदेशालय
जोन 7 (ICAR) जबलपुर

प्रकाशक

डॉ. एस. सी. यादव
कार्यक्रम समन्वयक,
कृषि विज्ञान केन्द्र
बस्तर (छ.ग.)

संपादक

इंजी. राहुल साहू
विषय वस्तु विशेषज्ञ,
कृषि प्रसंस्करण एवं
खाद्य अभियांत्रिकी

सहायक संपादक

श्री आर. एस. राजपूत
श्री तोषण ठाकुर
श्री दुष्यंत पाण्डे
श्रीमती सोनाली राजपूत

सप्तम वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

कृषि विज्ञान केन्द्र जगदलपुर में सातवीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन दिनांक 03 अप्रैल 2013 को सफलतापूर्वक किया गया। डॉ. एस.के. पाटिल, कुलपति, इं. गां.कृ.वि., रायपुर इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे एवं अध्यक्षता डॉ. जे.एस. उरकुरकर, निदेशक विस्तार सेवायें, इं.गा.कृ.वि., रायपुर ने की तथा सम्माननीय अतिथि के रूप में डॉ. एस.सी. मुखर्जी, अधिष्ठाता, श.गुं.कृ.महा., जगदलपुर, श्री आर.के. कश्यप, संयुक्त संचालक कृषि, बस्तर, डॉ. बी. कावड़े, संयुक्त संचालक पशुपालन, जगदलपुर एवं कृषि महाविद्यालय रायपुर के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, कृ.वि.के. के वैज्ञानिक एवं समिति के विभागीय एवं कृषकों सहित 37 सदस्य उपस्थित रहे।

माननीय कुलपति महोदय ने प्रस्तावित शोधों की समीक्षा करते हुए कहा कि खेतों में उन्नत तकनीक एफ.एल.डी. और ओ.एफ.टी. के माध्यम से पहुंचायी जानी चाहिए। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि धान पर और अधिक शोध तथा आधुनिक तकनीक अपनाये जाने की जरूरत है, क्योंकि यह छ.ग. राज्य की महत्वपूर्ण फसलों में से एक है। पुराने, अप्रचलित एवं प्रतिबंधित हर्बीसाईड, इन्सेक्टीसाईड का उपयोग प्रतिबंधित करने की भी बात कही। वहीं डॉ. जे. एस. उरकुरकर, निदेशक विस्तार सेवायें, इं.गां.कृ. वि., रायपुर ने स्थानीय व उन्नत फसलों की प्रदर्शन क्षेत्र को नई तकनीक के माध्यम से बढ़ाने की बात कही।

बैठक में उपस्थित श्री आर.के. कश्यप, संयुक्त संचालक कृषि, बस्तर ने जिले के किसानों को उन्नत कृषि यंत्रों, प्रसंस्करण मशीनों के उपयोग एवं सीड ड्रिल के कैलीब्रेशन के उपयोग पर केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षण दिये जाने की बात कही।



जिला पंचायत अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सदस्यों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण

कृषि विज्ञान केन्द्र, जगदलपुर के कार्यों का श्री लच्छूराम कश्यप, अध्यक्ष, श्री तरुण चोपड़ा, उपाध्यक्ष, श्री मनीराम जी, श्रीमती संतोबाई नाग, श्रीमती महावती मंडावी, श्रीमती कविता पाढ़ी, श्री राजेन्द्र शुक्ला, परियोजना अधिकारी एवं श्री राठौर जी सहित जिला पंचायत बस्तर के 21 सदस्यों एवं अधिकारियों द्वारा दिनांक 11 जून 2013 को अवलोकन किया। माननीय सदस्यों ने प्रक्षेत्र के काप कैफेटेरिया पर स्वीट कार्न तथा सब्जियों भिण्डी, सेमी आदि के प्रदर्शन सहित प्रदर्शनी कक्ष में विभिन्न प्रशिक्षण उत्पादों अचार, बड़ी, पापड़, मुरब्बा एवं उन्नत फसलों के बीजों के साथ-साथ लाभदायक एवं हानिकारक कीटों पर कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित किये गये प्रशिक्षण, प्रदर्शन, किसान मेला, संगोष्ठी आदि गतिविधियों के प्रदर्शनी का अवलोकन किया।



सामयिक सलाह

क्या करें... कैसे करें... क्यों करें...



जिला कलेक्टर बस्तर श्री पी. अन्बलमन (आई.ए.एस.) द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों का अवलोकन



संयुक्त-संचालक कृषि, बस्तर केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग के मैदानी कार्यकर्ताओं से मासिक कार्यशाला के दौरान परिचर्चा करते हुए

जुलाई

- धान की रोपाई कतार में करें। इससे कृषि क्रियाओं को करने में सहायता होती है तथा पौध संख्या पर्याप्त रहती है।
- धान में कतार से कतार की दूरी किस्म के अनुसार 15-20 से.मी. रखें।
- रोपा धान में नींदा नाशक दवा अंकुरण पूर्व (आक्सीडायजिल, ब्यूटाक्लोर, पेन्डीमेथेलिन) तथा अंकुरण के बाद 20-25 दिन पश्चात इथाक्सी सल्फथूरान, साइहेलोफाप ब्यूटाइल का छिड़काव करें।
- मई से जून में तैयार गड्डों में नवीन बागान लगाने हेतु पौध रोपण करें।

अगस्त

- देर हो जाने के कारण यदि धान की रोपाई इस माह करनी पड़ रही है तो पौधे की दूरी कम रखें व 2-3 पौधों का उपयोग करें।
- रोपा लगाने के पूर्व धान के थरहा की जड़ों को क्लोरोपायरीफास 20 ई.सी. दवा का 1 मि.ली./लीटर पानी तथा 2 किलो यूरिया मिलाकर 3-4 घंटे डुबोकर रोपा लगायें।
- धान की रोपणी/प्रथम अवस्था में कीटों से बचाव हेतु थरहा को मोनोक्रोटोफास 36 ई.सी. दवा का 750 मि.ली./हे. की दर से उपचारित करें।
- गन्ना फसल पर पायरिल्ला कीट के प्रकोप होने पर मिथाईल डेमेटोन 25 ई.सी. दवा का 700 मि.ली./हे. की दर से छिड़काव करें।
- गुलाब के पौधों में बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

सितम्बर

- धान की फसल में झुलसा नाव आकार के धब्बे दिखते ही ट्राइसाइक्लोजोल (6 ग्रा/10 ली. पानी/आइसोप्रोथियोलेन (1 मि.ली./ली. पानी) टेबुकोनाजोल (1.5 मि.ली./ली. पानी) में से किसी एक फफूँदनाशक दवा का छिड़काव करना चाहिए। यदि संभव हो तो छिड़काव हेतु साफ पानी का उपयोग करें तथा छिड़काव दोपहर 3 बजे के बाद करें तो रोग का प्रभावी नियंत्रण होगा।
- जीवाणु जनित झुलसा-बहरीपान रोग के लक्षण दिखने पर यदि पानी उपलब्ध हो तो खेत से पानी निकालकर 3-4 दिन तक खुला रखें तथा 25 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करें।
- पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण हेतु हेक्साकोनाजोल (1 मि.ली./ली. पानी) दवा का छिड़काव पानी की सतह के पास वाले पौधों के भागों पर करना चाहिए। रोग की तीव्रता के अनुसार छिड़काव दोहराया जा सकता है।



कादंबरी महिला स्व सहायता समूह का एक दिवसीय स्वरोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण



विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन के अन्तर्गत वि.ख. बकावण्ड में आधारभूत सर्वेक्षण कार्य



केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा खरीफ फसल की तैयारी हेतु कृषक प्रशिक्षण



प्रेषक : अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
कार्यक्रम समन्वयक
 कृषि विज्ञान केन्द्र, कुम्हरावंड
 जगदलपुर, जिला-बस्तर (छ.ग.)-494005
 नि:शुल्क फोन सेवा : 18001801551
 Ph. No. : 07782-229153
 Email : kvk_jagdalpur1@rediffmail.com
 Website : www.kvkjagdalpur.org

प्रति,

बुक पोस्ट

मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत बस्तर द्वारा के.वी.के. का भ्रमण



दिनांक 9 जून 2013 को श्री विपिन मांझी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जि.पं.-बस्तर ने कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यों की समीक्षा करते हुए संतोष जताया तथा केन्द्र में हरियाली को देखकर खुशी जाहिर की तथा उन्नत तकनीक का बस्तर के कृषकों के खेतों पर अधिकाधिक प्रदर्शन करने पर जोर दिया एवं जिला पंचायत द्वारा सहभागिता के बारे में आशा व्यक्त की।

आंचलिक परियोजना निदेशालय, जबलपुर के वैज्ञानिक द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यों की समीक्षा

डॉ. ए. पी. द्विवेदी, प्रमुख वैज्ञानिक (शस्य विज्ञान), आंचलिक परियोजना निदेशालय, जोन-7, जबलपुर ने बस्तर प्रवास के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा लाभान्वित कृषकों के प्रक्षेत्र एवं केन्द्र की गतिविधियों का अवलोकन किया। साथ ही उन्होंने केन्द्र में पदस्थ नये वैज्ञानिकों से परिचय प्राप्त किया तथा अपने-अपने विषयों की पारंगता के अनुरूप कार्य कर कृषकों को अधिक से अधिक लाभान्वित करने की बात कही।



खेत की तैयारी हेतु उन्नत कृषि यंत्र

किसान भाइयों हम सभी जानते हैं, कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारी लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि एवं कृषि आधारित गतिविधियों से ही अपनी जीविकोपार्जन करती है, लेकिन कृषि कार्यों के लिए अधिक श्रम करने के बाद भी किसानों को पर्याप्त लाभ नहीं मिल पाता है। उन्नत कृषि यंत्रों का उपयोग एक ऐसा माध्यम है जो कि किसानों को कम श्रम में अधिक से अधिक कृषि कार्य में मदद करके पर्याप्त लाभ प्रदान करता है। खेत की तैयारी हेतु कुछ उन्नत कृषि यंत्र निम्नानुसार हैं—

1. मिट्टी पलट हल या मोल्ड बोर्ड प्लाऊ :

सामान्य बोलचाल की भाषा में इसे एम.बी. प्लाऊ भी कहा जाता है। सामान्यतः देशी हल गहरी जुताई तो करता है परन्तु मिट्टी नहीं पलटता जबकि इस हल के द्वारा गहरी जुताई के साथ-साथ मिट्टी भी आसानी से पलट जाती है। इस यंत्र की कार्यक्षमता 0.33 हे./घंटा है।



2. कल्टीवेटर :

हल्की मिट्टी के खेतों को कल्टीवेटर से जोतकर तैयार किया जा सकता है। हल द्वारा खेत की जुताई के बाद मिट्टी को भुरभुरी बनाने के लिए कल्टीवेटर का उपयोग किया जाता है। छोटी फसल की पंक्तियों के बीच उगे खरपतवार को नष्ट करने के लिए कल्टीवेटर एक उपयोगी यंत्र है। इस यंत्र की कार्यक्षमता 0.9 से 1 हे./घंटा है।



3. तवेदार हैरो :

तवेदार हैरो किसानों में अत्यंत लोकप्रिय कृषि यंत्र है। विशेषरूप से चिकनी मिट्टी में हल से जुताई के बाद ढेले तोड़ने के लिए हैरो ही सर्वोत्तम यंत्र है। इस यंत्र में कई तवे एक ही धुरे में कसे होते हैं और इन धुरों के साथ साथ तवे भी घूमते हैं। जिन खेतों में खरपतवार की मात्रा अधिक होती है वहां इस यंत्र का उपयोग आवश्यक होता है। इस यंत्र की कार्यक्षमता 1 हे./घंटा है।



4. गीली जुताई यंत्र : (पडलर)

धान के पौधों की रोपाई के लिए गीली जुताई करके खेत तैयार करने के लिए इस यंत्र का उपयोग किया जाता है। पानी भरे खेतों में पौधों की रोपाई के पूर्व खरपतवार को कम करने तथा कीचड़ बनाने के लिए इस यंत्र की अहम भूमिका होती है। इस यंत्र की कार्यक्षमता 0.45 हे. / घंटा है।



5. रोटावेटर :

ट्रैक्टर के शक्ति संचारण लट्ठे (पी.टी.ओ.) द्वारा कार्य करके खेत को तैयार करने का यह एकमात्र यंत्र है। जिन खेतों में खरपतवार की मात्रा अधिक होती है उनमें इस यंत्र का उपयोग आवश्यक होता है। इनके डिस्क पैन से खरपतवार एवं ढेले आसानी से कट जाते हैं और मिट्टी भुरुभुरी बनती है। इस यंत्र की कार्यक्षमता 0.40 हे. / घंटा है।



6. सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल :

फसल को एक ही लाईन में जुताई करने में यह एक कारगर कृषि यंत्र है। इस यंत्र के माध्यम से बीज एवं खाद एक ही समय में एकसाथ व उचित मात्रा में डाली जा सकती है। इस यंत्र की कार्यक्षमता 0.60 हे. / घंटा है।



7. धान रोपाई यंत्र (पैडी ट्रांसप्लान्टर) :

धान का पौधा तैयार हो जाने पर उचित समय पर खेतों में लगाने के लिए इस यंत्र का उपयोग किया जाता है। इसके माध्यम से पौधों की दूरी तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी निश्चित रखी जाती है। इस यंत्र की कार्यक्षमता 0.20 हे. / घंटा है।



विगत तीन माह की गतिविधियां (अप्रैल-जून 2013)

कृषक/महिला/युवा एवं प्रसार कार्यकर्ता प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	एस.सी./एस.टी.	अन्य	कुल
1.	फसलोत्पादन	09	197	65	262
6.	शासकीय विभाग	11	309	56	365

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल प्रदर्शन	किस्म	रकबा हे.	लाभार्थी संख्या
1.	गेहूँ	जी.डब्ल्यू 366	05	13
2.	मक्का	900 एम. गोल्ड	05	13

जल ग्रहण परियोजना के अन्तर्गत

1.	अलसी	कार्तिका, दीपिका	05	15
2.	चना	जे.जी. 11	03	12
3.	गेहूँ	जी.डब्ल्यू 366	02	04
4.	मक्का	हाईब्रिड	05	20

बी.आर.जी.एफ. परियोजनान्तर्गत

1.	चना	जे.जी. 11	05	15
2.	मक्का	हाईब्रिड	05	16
4.	सब्जियाँ (बैंगन, टमाटर बरबट्टी)	उन्नत किस्में	03	25

आर.के.वी.वाय. परियोजनान्तर्गत

1.	चना	जे.जी. 11	26	65
----	-----	-----------	----	----

आर.के.वी.वाय. (निदेशक सेवानें, कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर

1.	चना	जे.जी. 11	10	10
----	-----	-----------	----	----

आदिवासी उपपरियोजना (टी.एस.पी.) योजनान्तर्गत

1.	चना	जे.जी. 11	16	40
2.	मसूर	डी.पी.एल. 62, 15 आई.पी.एल. 87	10	25
3.	मटर	प्रकाश, विकास, पारस	12	30
4.	कुल्थी	बी.के. 1	04	10

नाबार्ड (पाइलट प्रोजेक्ट) योजनान्तर्गत

1.	धान	एम.टी.यू. 1010	10	25
2.	मशरूम	आयस्टर मशरूम	05	05

प्रक्षेत्र अनुसंधान परीक्षण (ऑन फॉर्म टेस्टिंग)

क्र.	फसल परीक्षण	किस्में	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा हे.	लाभार्थी संख्या
1.	मसूर	डी.पी.एल. 15	उन्नत किस्मों का आंकलन	02	04
2.	मिर्च	नामधारी 1701	हाईब्रिड किस्मों का आंकलन	02	06
3.	गेहूँ	हाईब्रिड 1544	उन्नत किस्मों का आंकलन	02	04
4.	गेहूँ	वेस्ता	धान के नये खरपतवारनाशी का आंकलन	02	04
5.	मक्का	हाईब्रिड 30वी.92	हाईब्रिड किस्मों का आंकलन	02	05

विगत तीन माह की प्रसार गतिविधियाँ

क्र.	फसल प्रदर्शन	संख्या	लाभान्वितों की संख्या
1.	समाचार पत्रों में खबरें प्रकाशित	08	अनेक
2.	लोकप्रिय लेख प्रकाशित	03	अनेक
3.	कृषकों का केन्द्र प्रक्षेत्र भ्रमण	18	120
4.	वैज्ञानिकों का खेतों में भ्रमण	16	86
5.	दूरदर्शन/आकाशवाणी वार्ता	02	अनेक